हिंदी सिनेमा में कथक नृत्य

(विशेष सन्दर्भ में 'झनक झनक पायल बाजे' 'नवरंग' 'कोहिनूर' और मुग़ल – ए – आज़म)

Kathak Dance in Bollywood Cinema

(In the context of movie : jhanak jhanak payal baje, navrang, kohinoor, mugal-e-azam)

एम.फिल. प्रदर्शनकारी कला (फिल्म और नाटक) उपाधि हेतु

लघु शोध – प्रबंध

सत्र : 2015- 16

शोधार्थी ज्योति सिंह

पंजीयन सं. –2015/07/204/006

प्रदर्शनकारी कला (फिल्म और नाटक) विभाग, साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केन्द्रीय विद्यालय

गाँधी हिल्स, वर्धा – 442005 (महाराष्ट्र)

अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं

प्रमाण पत्र	i
घोषणा	ii
आभार	iii
अनुक्रमणिका	iv
भूमिका	v - vi
अध्याय एक – शोध संरचना	1-4
अध्याय दो – कथक नृत्य का परिचय	5 -29
अध्याय तीन – हिंदी सिनेमा में नृत्य का स्वरूप	30-53
अध्याय चार – हिंदी सिनेमा में कथक नृत्य	54-96
उपसंहार	97
परिशिष्ट – साक्षात्कार	98 -104
सन्दर्भ सूची	105-109

भूमिका

चलचित्र यानी सिनेमा से आज बच्चा भली –भांति परिचित ही नहीं इसके प्रति आकर्षित भी है | प्रत्येक विचारशील व्यक्ति इसके प्रभाव एवं सम्मोहन को जनता है | आखिर सिनेमा इतना असरकारी क्यों है ? चित्रकारी हो, नाट्य – कला हो, काव्य – कला हो, कथा साहित्य हो अथवा गीत – संगीत हो | इनमें से कोई एक कला कहें या विधा हमें अभिभूत करने व आनंदमय करने की क्षमता रखती है | सिनेमा में इन सभी कलाओं का समावेश रहता है | इस दृष्टि से यह कहना उचित होगा कि सिनेमा सेल्युलाइड (अब पोलीथिन पर) अंकित एक ऐसी विधा है जिसमें अनेक ललित कलाओं का कलात्मक, साहित्यिक, काव्यात्मक, श्रेष्ठतम संगम मौजूद रहता है |

जितनी भी ये सभी विधाएं है जो आज इतनी विकसित और परिष्कृत रूप में सिनेमा के माध्यम से हमारे सामने है यहाँ तक पहुँचने की कहानी भी बहुत रोचक है | जिसमे से हम नृत्य विधा की बात करेंगे | भारतीय सिनेमा में फिल्मों के निर्माण के साथ ही उनमे नृत्य का समावेश हो गया था चाहे वे मूक फिल्म रही हो या बोलती, नृत्य एक आवश्यक तत्व शुरू से ही रहा और आज इसने इतनी तरक्की कर ली कि यह प्रत्येक फिल्म में अनिवार्य हो गया है |

फिल्मों में नृत्य की प्रस्तुति मनोरंजन मात्र के लिए नहीं होती | नृत्य पूरी कहानी से सम्बंधित एक अहम हिस्सा होता है | आजकल नहीं हो रहा यह अलग बात है लेकिन पुराणी सभी फिल्मों में यह देखा जा सकता है | इसके अलवा वह समय, स्थिति, माहौल, मनः स्थिति तथा अभिनेत्री के व्यक्तित्व और जिस पात्र को वह अभिनीत कर रही है उसका चरित्र भी उजागर करे तभी उसकी सार्थकता मानी जाएगी | आगे हमने जिस नृत्य विधा की बात की है वह है कथक नृत्य | हिंदी सिनेमा में नृत्य तो मूक सिनेमा दौर से ही था किन्तु कत्थक लगभग 40 वर्ष बाद आया जिसकी शुरुआत वी. शांताराम की फिल्म झनक– झनक पायल बाजे से मानी जाती है जिसकी चर्चा आगे की गयी है |

यहाँ कथक के इतिहास पर प्रकाश डाला गया है और यह भी बताया गया है की वह किन परिस्थितियों से गुजर कर हिंदी सिनेमा में अपना स्थान कायम कर पाया है इसके अतिरिक्त इसमें मूक सिनेमा दौर से लेकर स्वर्णिम युग तक के हिंदी सिनेमा के सफ़र में नृत्य की स्थिति में कितना परिवर्तन हुआ और उस बीच कथक का हिंदी सिनेमा में कैसे आगमन हुआ और किस प्रकार से कथक नृत्य हिंदी फिल्मों में किया जाता है यह सभी सन्दर्भ आगे विस्तार से बताये गये है |

शोध संरचना

विषय का परिचय

आधुनिक समय में सिनेमा जीवन का एक हिस्सा है जिसे हम जन समुदाय से अलग नहीं कर सकते यह सिनेमा ही है जिसके माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों के रूप अलग-अलग दृश्यबंधों के माध्यम से हमारे सामने चले आ जाते है वस्तुतः आज हम जिसे सिनेमा के नाम से जानते है वह बहुत कुछ रूप में रंगमंच, नृत्य, लोकनृत्य, लोक-नाट्य से गुजरते हुए हम तक पहुँचने वाली एक ऐसी शैली है जिसने आज यांत्रिकता के विभिन्न रूप पाकर कला का रूप धारण कर लिया है|

सिनेमा कला का आधुनिकतम रूप है, सिनेमा समग्रता का दूसरा नाम है अन्य कई कलाओं की तरह सिनेमा कला की कई विधाओं जैसे - साहित्य, चित्रकला, संगीत, नृत्य आदि का मिला-जुला रूप है | सिनेमा भी विश्व की अन्य आधुनिक कलाओं की तरह, मनुष्य की कलात्मक सोच और उसकी विरत चेतना से निकली अभिव्यकि का एक सशक्त तकनीकी माध्यम है | जिसके चलते सिनेमा में समय - समय पर बदलाव होते रहे है, तथा साथ - साथ दर्शको की रुचियों का काफी विस्तार हुआ है दर्शकों की उन्ही रुचियों में से एक कला का नाम है नृत्य |

सिनेमा में नृत्य का प्रारंभ कैसे हुआ तथा सिनेमा में बदलाव के साथ - साथ नृत्य में भी बदलाव हुआ, लोक नृत्य के साथ - साथ हिंदी सिनेमा में शास्त्रीय नृत्य भी होते रहे है जिनमे प्रमुख है- 'कत्थक' | जो हिंदी सिनेमा में पिछले लगभग 60 दशकों से प्रचलित है | 'कत्थक' अर्थात 'कथा कहे सो कत्थक कहावे' या 'कथा कहे सो कत्थक' |

विषय की उपयोगिता

समाज में जो ऐसे लोग थे जिनका पैतृक काम गायन, वादन या नर्तन से जुडा हुआ था, उन्होंने जीविका चलाने के लिए मंदिरों तथा तीर्थ - स्थलों का सहारा लिया वे वहां नाच-गाकर भगवान की कथा के कुछ अंश भक्त - दर्शकों के सामने प्रस्तुत करते थे | कत्थक नृत्य उसी संयोग से उत्पन्न हुआ| कत्थक नृत्य का प्रारम्भ मंदिरों में कथा - प्रधान नर्तन से हुआ इसका एक प्रमाण यह भी है कि प्रारंभ में कत्थक नृत्य का आधार पखावज और मंदिरों में गए जाने वाले

ध्रुपद धमार थे | मुग़ल-सभ्यता आने के बाद जब संगीत जगत में तबले की सांगत प्रारंभ हुई तो कत्थक नृत्य में पखावज के साथ-साथ तबला भी जुड़ गया |

मुगलों का शासन स्थापित होने के बाद देश में कुछ शांति का माहौल बना | उस माहौल में छोटे-बड़े राज-दरबारों में मनोरंजन के लिए कुछ गायक, वादक तथा कुछ गुणीजनों को दरबार में रखा गया और फिर ऐसा समय आया की कलाकारों की कला चमकने लगी | रीती-काल अर्थात 17वीं शताब्दी के बाद इस कला के कलाविदों में 'कत्थक' नृत्य धीरे-धीरे प्रचलित हुआ |

कुछ कलाकार अपनी जीविका के लिए मुग़ल-दरबार पहुंचे | मुग़ल - बादशाहों तथा नवाबों ने नृत्य को मनोरंजन के साधन के रूप में स्वीकृत किया | नर्तक नृत्य में पांव का चमत्कार दिखाने लगे, राधा - कृष्ण की रासलीला को गा - गा कर तथा उसमे भाव दिखा कर नृत्य अर्थात ठुमरी दिखाने लगे, नृत्य में तबले - पखावज के बोलों से पांव के काम की स्पर्धा होने लगी | इतना ही नहीं नृत्य मुख्यतः श्रृंगारिक हो गया| मुग़ल - दरबारों ने नृत्य में ठुमरी, ग़ज़ल, तराना आदि को बढावा दिया | कत्थक नृत्य अब तोड़ों, तुकडे कवित्त तथा लयकारी के चमत्कार दिखाने की दिशा में बढ गया |

किन्तु अंग्रेजी हुकूमत में नृत्य व संगीत कला को पुनः झटका लगा | अंग्रेज़ न तो राधा को जानते थे न कृष्ण को | न ही उनका भारतीय लयकारी और ताल से कोई सरोकार था | उस समय लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह, रायगढ़ के महाराजा चक्रधर सिंह तथा रामपुर के नवाब हामिद अली साहब ने भारत के शास्त्रीय नृत्य और गायन शैली को प्रोत्साहित किया |

आज़ादी के बाद 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यदि हिंदी सिनेमा के प्रसिद्ध सिने-निर्माता व्ही. शांताराम 'झनक झनक पायल बाजे' नामक फिल्म न बनाते तो देश की सम्पूर्ण जनता कत्थक नृत्य से परिचित न हो पाती | ऐसी दशा में कत्थक नृत्य राजे, महाराजे, नवाब, जमींदारों तथा कोठेवालियों की महफ़िल तक सिमटा रहता | उस फिल्म के माध्यम से कत्थक नृत्य की जनता के साथ सीधे पहचान बनी | जिसके चलते आज तक अन्य हिंदी सिनेमा में कत्थक नृत्य

प्रस्तुत करने वाली कई फिल्म बन चुकी है| जैसे - मुगल-ए-आज़म, अनारकली, ताजमहल, नवरंग, मधुमती, पाकीज़ा, उमराव जान, शतरंज के खिलाडी, देवदास आदि फिल्मों में कत्थक देखने को मिलता है |

विषय का उद्देश्य

शायद ही हममे से कोई ऐसा होगा जो सिनेमा के आकर्षण से अछूता होगा | सिनेमा मात्र मनोरंजन नहीं बल्कि देश-काल और समाज का अज्ञात का आईना रहा है | हिंदी सिनेमा सौ साल से भी अधिक समय से अपना प्रभाव दिखता रहा है हर फिल्म अपने आप में एक सम्पूर्ण दुनिया होती है सिनेमा व्यवस्था का एक सार्थक और बहुत बड़ा क्षेत्र रहा है लेकिन सिनेमा को मात्र एक व्यवसाय मान लेना कला के इतने बड़े और शक्तिशाली माध्यम के लिए एक भूल होगी | इससे भी अधिक सिनेमा समाज और देश की संस्कृति और उसके स्वरूप का चित्रण करता है और 20वीं सदी में व्ही. शांताराम ने भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण और पारंपरिक कला'कत्थक' नृत्य को दर्शकों के सामने अपनी फिल्म 'झनक झनक पायल बाजे' (1955) के माध्यम से रखा जिससे कारन आज भारत का प्रत्येक कला प्रेमी व्यक्ति कत्थक नृत्य से परिचित है |

अतः यहाँ लघु शोध प्रस्ताव का मुख्य उद्देश्य कत्थक पर आधारित हिंदी सिनेमा में नृत्य पर प्रकाश डालना है कि किस प्रकार हिंदी सिनेमा में 'कत्थक' का आगमन हुआ और कैसे 'कत्थक' हिंदी सिनेमा की पहचान बना |

शोध पद्धति

प्रस्तुत लघु शोध प्रताव में मैं हिंदी सिनेमा में आये कत्थक नृत्य के आरम्भ, उसके इतिहास तथा उसकी विकास यात्रा पर प्रकाश डालना चाहती हूँ कि हिंदी सिनेमा में कत्थक का आगमन कैसे हुआ और कत्थक को दर्शक तक पहुँचाने में हिंदी सिनेमा ने क्या भूमिका निभाई और किस प्रकार कत्थक नृत्य परम्परा हिंदी सिनेमा में स्वयं को स्थापित कर पाई |

इसी दृष्टिकोण को रखते हुए मैंने अपने शोध में जिन पद्धति का प्रयोग किया वे है :

1. प्रथम सामग्री : साक्षात्कार ,

2. पुस्तकों का विस्तार पूर्वक अध्ययन|
3. पत्रिकाओं का अध्ययन |

इन्ही सब शोध सामग्री के माध्यम से ही मैंने अपने शोध को निष्कर्ष तक ले जाने का प्रयास किया है|

उपसंहार

भारत के शास्त्रीय नृत्यों में कथक की अपनी अलग पहचान है | जहाँ तक यह सवाल है कि यह नृत्य देश के कितने बड़े क्षेत्र का नृत्य है तो कहना होगा कि भारत के शास्त्रीय नृत्यों में यह सबसे बड़े भू – भाग का नृत्य है जिसकी समानता कोई नहीं कर सकता कथक पुरे उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य है जिसने अपनी पहचान केवल भू – भाग तक ही सिमित नहीं रखी बल्कि सिनेमा में भी अपना स्थान बनाया है और अब कथक की अपनी अलग पहचान के साथ लोगों के दिलों को भी कथक ने छू लिया है जहाँ पहले किसी समय में इसे तुच्छ नज़रों से देखा जाता था जिसे नीच कार्य समझा जाता था जिसकी एक वजह किसी समय में इस कला का कोठे पर जाने के कारण भी पतन हुआ था लेकिन अब इसे एक सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता है |

कथक का इतिहास लोगों के सामने उसके लिए अभिशाप बनकर आया था लेकिन यह भी सच है कि दरबारों में जाने पहले कथक के बड़े – बड़े आचार्य समाज में ब्राह्मण होने के कारण सम्मान पा चुके थे | लोग उन्हें महाराज कह कर संबोधित करते थे | लेकिन कथक वर्ग को शिक्षा के आभाव के कारण बहुत कष्ट हुए | और आगे चलकर यह जीविका के लिए कोठों तक जा पहुंचा | जिसके कारण कथक वर्ग को समाज में अपनी प्रतिष्ठा और सम्मान से हाथ धोना पड़ा | स्वतंत्रता के बाद कुछ बुद्धिजीवियों का ध्यान भारतीय प्राचीन कलाओं की परम्पराओं को सुरक्षित करने की और घूमा, और फिल्म दुनिया के माध्यम से कथक को फिर से नई पहचान मिली | वी. शांताराम ने कथक आधारित फ़िल्में बनायीं और इस मरती हुई कला को जीवनदान दिया और लोंगों तक पहुँचाया |

आज बौद्धिक चेतना का युग है, आज समाज बुद्धिजीवी है | आज के आदमी की सोच पूरी तरह बदली हुई है | वह मनुष्य की चाल – ढाल, भाषा – शैली से मनुष्य को पल भर में पहचान लेता है | इसलिए आवश्यकता है कि कथक नृत्य के क्षेत्र में उन सभी नृत्य साधकों को सम्मान तथा समान अवसर दिया जाना चाहिय जो किसी भी कला का सम्मान करे और अन्तः में कलाकारों को भी चाहिए कि इस महान नृत्य – कला की गरिमा को भविष्य में कभी भी नष्ट न होने दें |